पुस्तक के बारे में

हम लगातार एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहे हैं जिसमें युद्ध, और आतंकवाद के कुप्रभावों की अपेक्षा अधिक नुकसानप्रद स्थायी मुद्दों कूड़ा, स्वच्छता, जल व ऊर्जा की कमी है। दी एनर्जी एण्ड रीर्सोसेज इंस्टीट्यूट के दी एडुकेटिंग यूथ फार सस्टेनेबल डेवलपमेंट (ई वाई एस डी) विभाग, नई दिल्ली ने इस बात का एहसास किया और एल बी सी टी के सहयोग से स्कूलों और सामाजिक समितियों को एक साथ स्वच्छता और हरित पर्यावरण के कार्यों के प्रति जागरूक करने के लिए इस कार्यक्रम का प्रारंभ किया है। इस कार्य के तहत छात्रों और स्वयं सहायता समूह (एस एच जी) सदस्यों के बीच कूड़ा प्रबंधन, जल संरक्षण के मुद्दों और नवीन ऊर्जा के स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा एवं स्वास्थ्य का महत्व, साफ़–सफाई एवं स्वच्छता के उपयोग के विषय में जागरूकता लाना और उनमें उत्तरदायित्व की भावनाओं को मन में बिठाना एवं उनमें क्षमता का निर्माण करना है।

The Energy and Resources Institute

कार्यपुस्तिका

© द एनर्जी एंड रिसोर्सेस इंस्टीटयूट 2014

समर्थन:
लेडी बैमफोर्ड चैरिटेबल ट्रस्ट

अवधारणा, संपादन, समीक्षा और सभी समन्वय:
नेहा

कंटेंट
नेहा
गरिमा कौशिक
मौनमी बरुआ
नमिता शर्मा

डिज़ाइन:
अनिता बैनर्जी

अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करे,
नेहा
दी एडुकेटिंग यूथ फार सस्टेनेबल डेवलपमेंट (ई वाई एस डी)
द एनर्जी एंड रिसोर्सेस इंस्टीटयूट–(टेरी)
6सी, दरबारी सेठ ब्लॉक, आईएचसी कांपलेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली–110003, भारत
दूरभाष : +91-11-2468 2100, 4150 4900
फैक्स: +91-11-2468 2144, 45
ई–मेल: nehag@teri.res.in
वेबसाइट: www.teriin.org

The Energy and Resources Institute

ऊर्जा

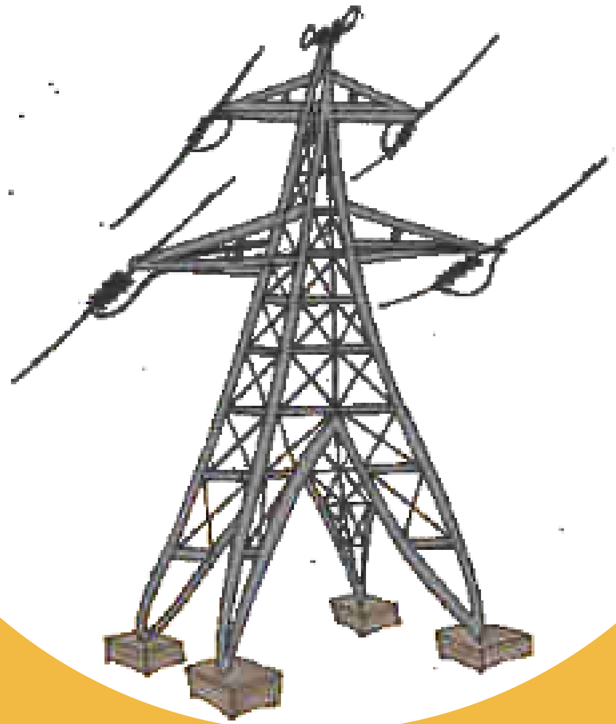

जहाँ चाह वहाँ राह

पखवारा गाँव भारत के अन्य गाँव की तरह नदी के किनारे एक छोटा सा सुन्दर गाँव था। गाँव का वातावरण बेहद खुशगवार और प्रदूषण रहित था। वहाँ लोग खुले दिल और खुले विचारों के थे। वे खेती बाड़ी से अपना गुज़ारा किया करते थे।

एक बार एक उद्योगपति वहाँ से गुजर रहा था तो प्रकृति के संसाधन जैसे शुद्ध पानी और खुली जमीन देख कर उसने उस गाँव में अपनी फैक्ट्री डालने का विचार किया और वहाँ के भोले भाले लोगों को उनके भविष्य के सुनहरे सपने दिखा कर फैक्ट्री लगाने के लिए मना लिया।

फैक्ट्री के आने से वहाँ के लोगों को नौकरी तो मिली पर साथ साथ फैक्ट्री द्वारा हो रहे प्रदूषण से उनकी नदी का पानी काला पड़ने लगा, हवा से ताज़गी चली गई और लोगों में कई तरह की बीमारियाँ होने लगी।

एक दिन स्कूल के कुछ बच्चे विज्ञान की कक्षा के बाद आपस में गाँव की परिस्थिति को ले कर विचार करने लगे कि कैसे उनका साफ़ सुन्दर गाँव एक प्रदूषित गाँव बन गया है। उनमें से एक बच्चे ने बताया कि उसके पिताजी ने उसे बताया है कि आने वाली गर्मियों की छुट्टी में बिजली की बहुत कटौती होगी और सारी बिजली फैक्ट्री को दे दी जाएगी। इस पर दूसरे बच्चे ने बताया कि सरपंच जी ने भी सभी किसानों की बैठक बुलाई है क्योंकि फैक्ट्री से निकल रहे प्रदूषित पानी से फसल को काफी नुक्सान हो रहा है जिससे अनाज की उपज पर भारी फर्क पड़ा है।

सभी बच्चों की बातों को दूर से सुन रहे विज्ञान के अध्यापक मनोज सर नें बच्चों को बताया कि अच्छी फसल न होने के कारण कुछ किसान अपने खेत बेचने का विचार कर रहे हैं जो कि अच्छी बात नहीं है और उससे देश की अनाज की समस्या और ख़राब हो सकती है।

थोड़ी देर विचार करने के बाद उन्होंने कहा कि उनकी एक दोस्त मीरा जो कि इसी गाँव की है और अब एक ऐसी संस्था में काम करती है जो पर्यावरण की सुरक्षा के लिए लोगों की सहायता करती है। उन्होंने मीरा को फोन किया और उन्हें गाँव में स्कूल के बच्चों से बात करने के लिए आमंत्रित किया।

मीरा हमेशा से अपने गाँव के लिए कुछ करना चाहती थी, उसने तुरंत मनोज सर का न्योता स्वीकार कर लिया।

गाँव आकर और स्कूल के बच्चों से मिल कर मीरा ने स्कूल के प्रधानाचार्य और गाँव के सरपंच जी से मुलाकात की और उन्हें समझाया कि अगर स्कूल और गाँव में सूरज की किरणों से बिजली का उत्पादन किया जाए तो बिजली की समस्या हल की जा सकती है। इससे न केवल घरों में बिजली की आपूर्ति होगी बल्कि खेतों में भी नलकूपों द्वारा पानी की समस्या को खत्म किया जा सकता है।

मीरा ने उन्हें बताया कि सूरज की रोशनी सीधे फोटोवोल्टिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से बिजली उत्पन्न करने के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। सौर कोशिकाओं का उपयोग एक ऐसा विकल्प है जिससे बिजली कम लागत में पैदा की जा सकती है और सौर उर्जा खाना पकाने के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

परंतु फैक्ट्री से हो रहे प्रदूषण से परेशान सरपंच जी जब इस बात से सहमत नहीं हुए तो मीरा ने उन्हें सौर उर्जा का उपयोग करने के फायदे और उसकी समानता के बारे में बताया कि गर्मियों के साथ साथ सर्दियों में भी धरती का प्रत्येक वर्ग मीटर टुकड़ा सौर विकिरण की एक उचित मात्रा प्राप्त करता है। सूरज की रोशनी हर जगह है और संसाधन व्यवहारिक अटूट है। यहाँ तक की बादलों के दिनों में भी हम कुछ धूप प्राप्त करते हैं। यह एक अक्षय स्रोत है। सूरज की रोशनी सबके लिए पूरी तरह से मुफ्त है। प्रारंभिक पूंजी परिव्यय के बाद आप को हर महीने बिजली के बिल का भुगतान नहीं करना पड़ेगा। सौर ऊर्जा प्रदूषण रहित है इससे पर्यावरण को भी कोई खतरा नहीं है। सौर उर्जा प्रणाली का रखरखाव लगभग मुफ्त है।

मीरा की बातें सुन कर सभी प्रसन्न हुए और मीरा को जल्दी से जल्दी कार्य शुरू करने का आग्रह किया।

मीरा ने अपने दफ्तर में लोगों से बात की और अपने सहयोगियों, गाँव वालों और सरकार के सहयोग से सोलर पावर प्लांट की स्थापना की। अब इस बात को दो साल हो गए हैं और गाँव में कभी भी बिजली नहीं जाती है और न ही गाँव वालों को बिजली के भारी भरकम बिल अदा करने पड़ते हैं।

—नमिता शर्मा

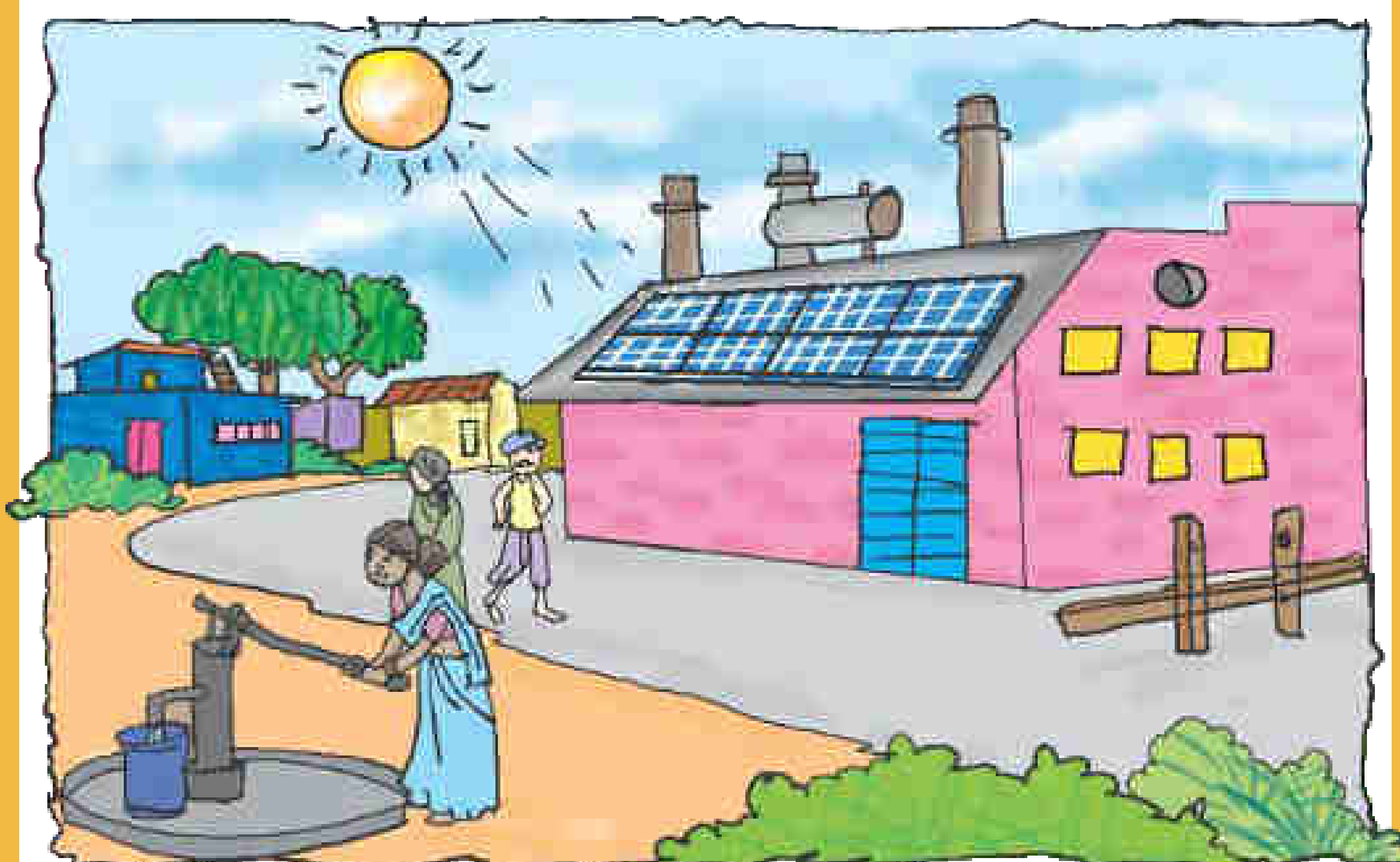

बिंदुओं को मिलाएँ और रंग भरें।

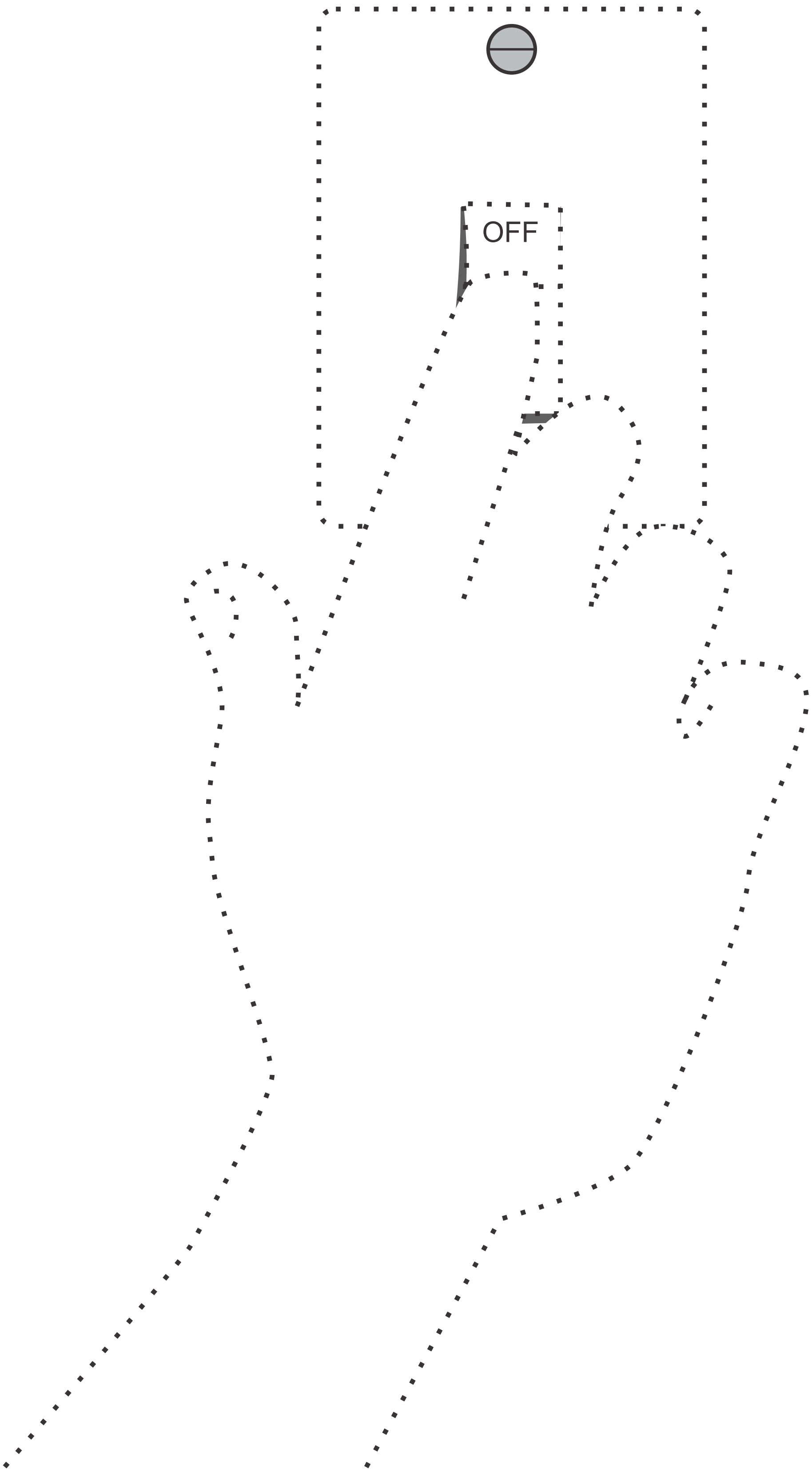

अत्यधिक स्टार रेटिंग के उत्पादों की संख्या की खोज करें और अपनी कक्षा का स्टार बनें।

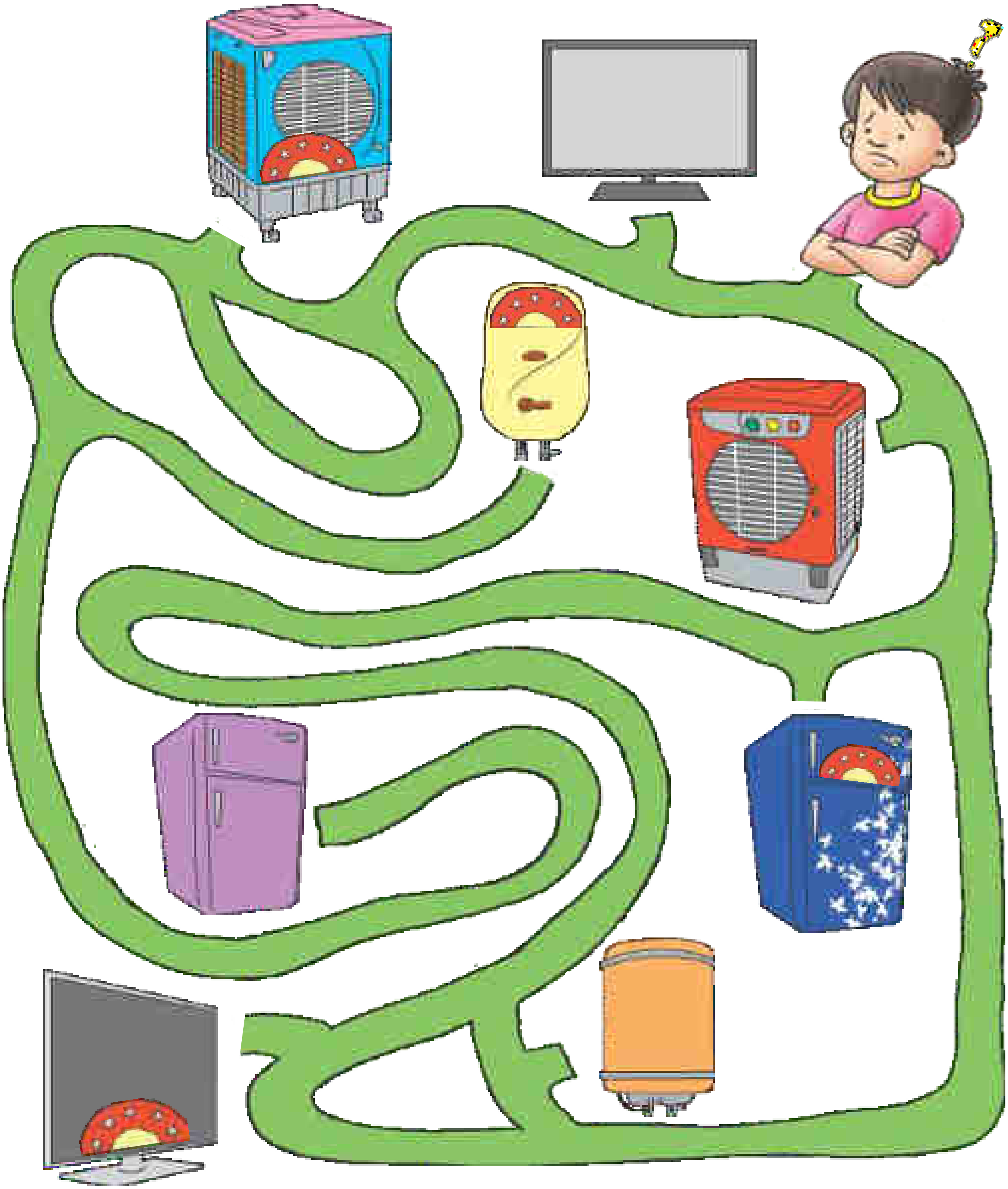

अंतर खोजें।

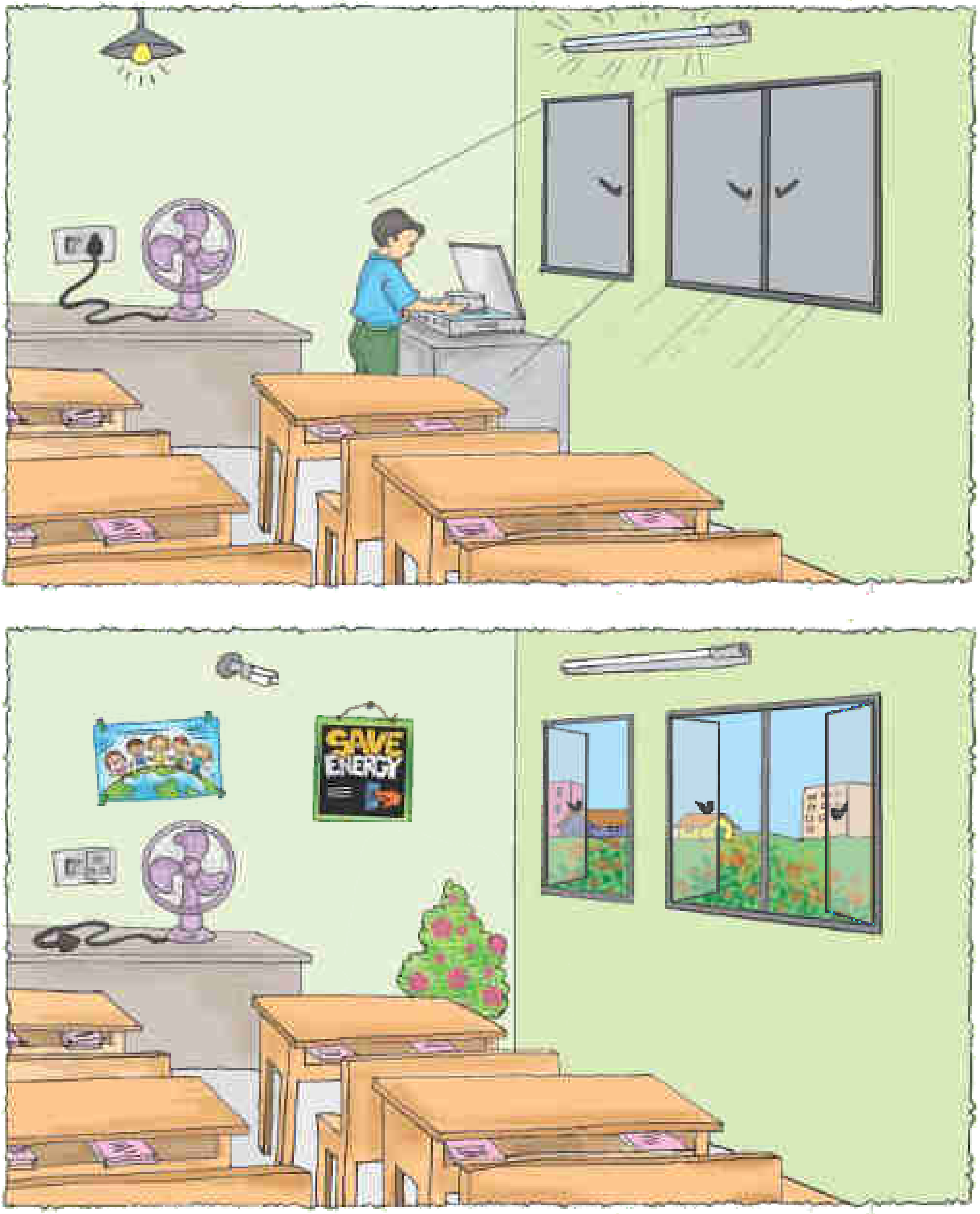

रंग भरें।

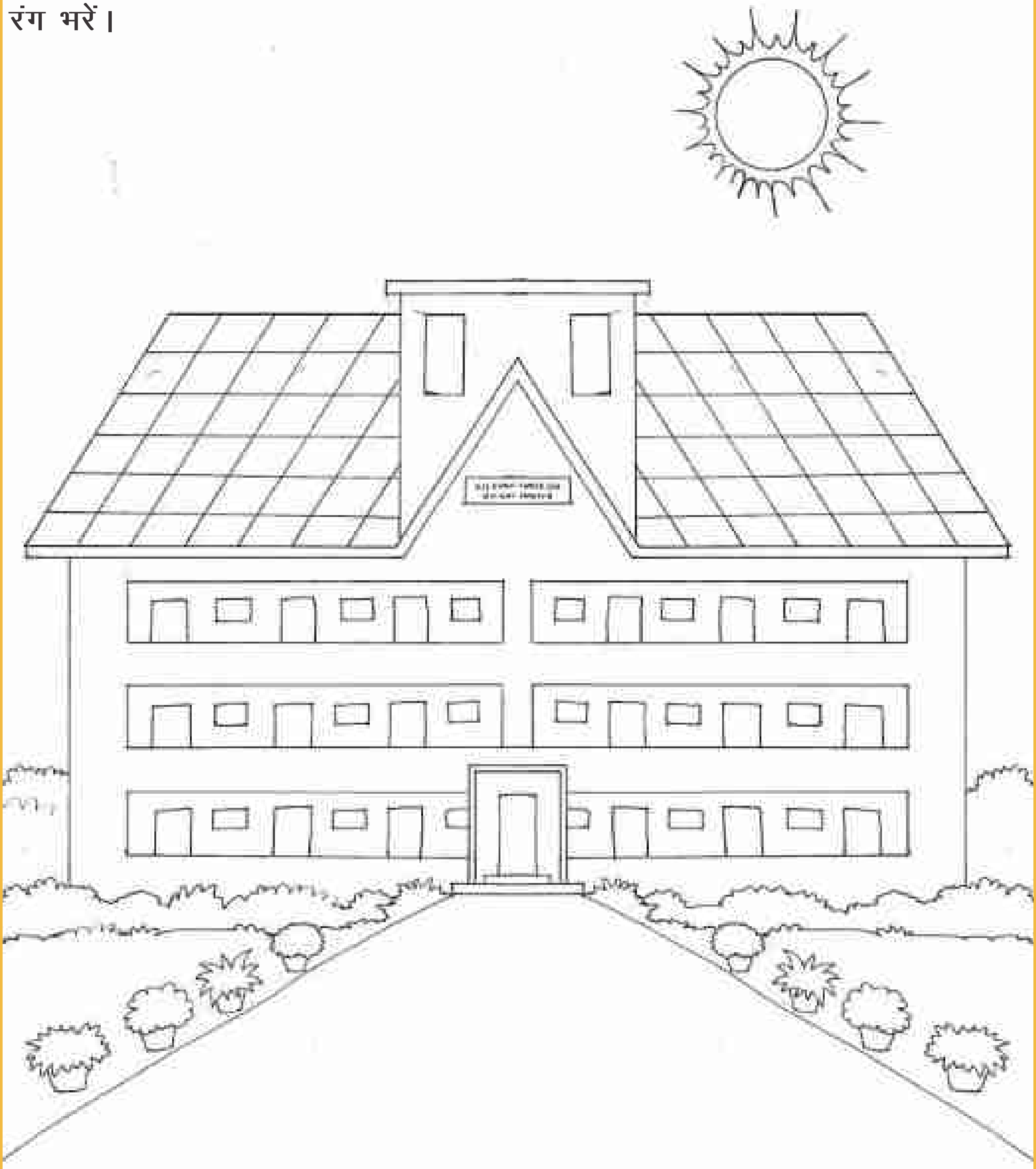

वाक्य बनाएँ–

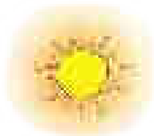	
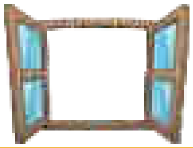	

कार्यकलाप

इस चित्र में सही और गलत चीजें ढुँढें। दिये गये बॉक्स में सही चीजों को (✓) करें और गलत चीजों को (×) करें।

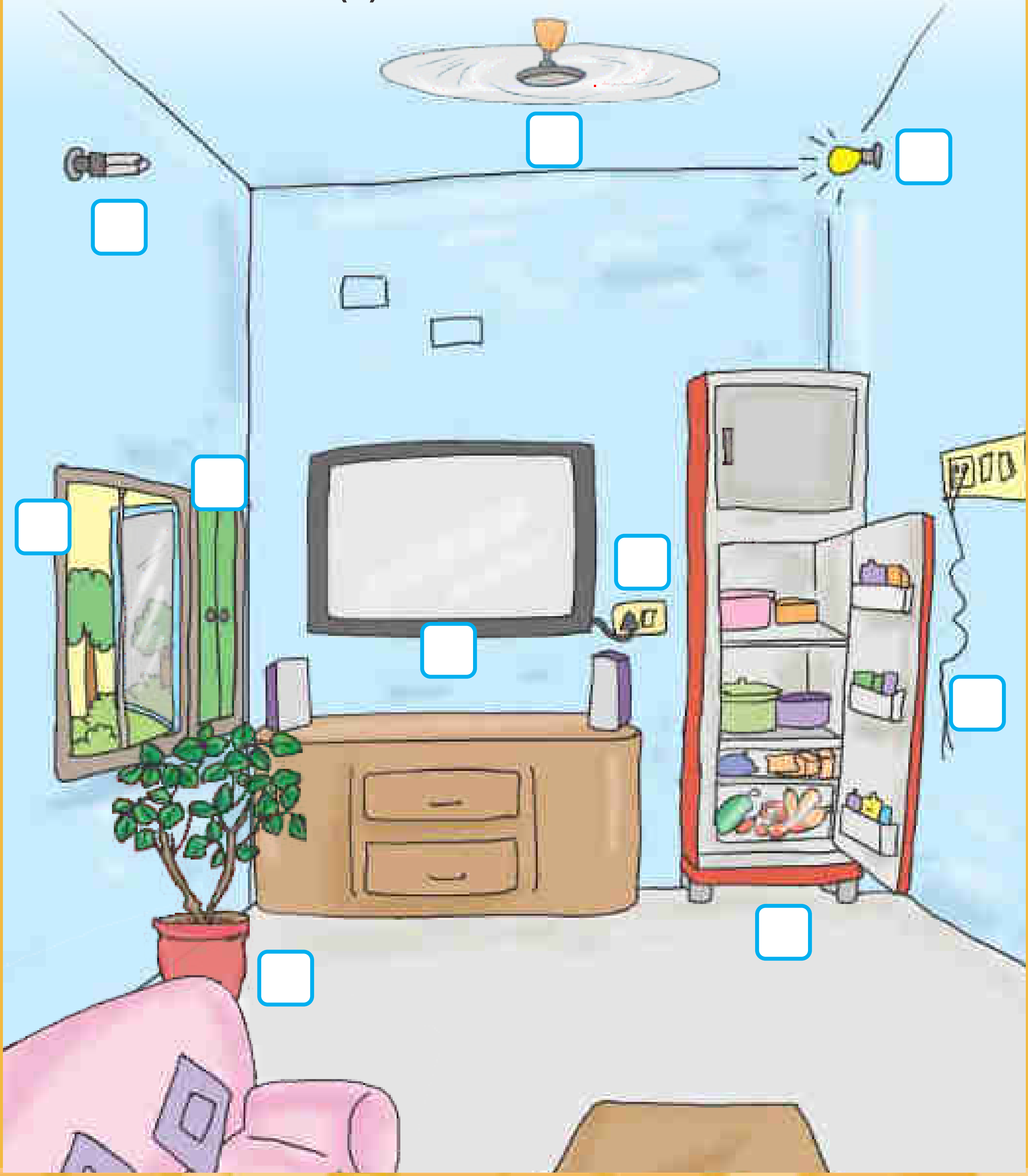

चित्र को देखकर अपनी कहानी लिखें।

स्वास्थ्य
एवं
स्वच्छता

टिंकू बना समझदार

यह कहानी एक जंगल की है, जहाँ सभी जानवरों के बच्चे स्कूल में पढ़ने जाते थे। स्कूल की अध्यापिका मीता लोमड़ी थी, जो नन्हें जानवरों को पढ़ना– लिखना और सही तरीके से जीना सिखाती थी।

स्कूल की घंटी बजी और सभी जानवर खेलने चले गए। कक्षा में टिंकू बन्दर को अकेले बैठे देखा तो मीता लोमड़ी उसकी ओर चली आई। टिंकू बन्दर ढंग से खाता नहीं था, और कुछ दिनों से चुपचाप रहता था। पास जाकर देखा तो वह रो रहा था।

मीता लोमड़ी– अरे टिंकू। क्या हुआ? तुम क्यों रो रहे हो? और खेलने के समय ऐसे कक्षा में अकेले क्यों बैठे हो?

टिंकू बन्दर– मैडम। मुझे स्कूल में अच्छा नहीं लगता। सभी मेरा मजाक उड़ाते हैं, और मुझसे कोई दोस्ती नहीं करता।

मीता लोमड़ी– तुम तो बहुत अच्छे विद्यार्थी हो। पढ़ाई में भी कुशल हो। सब बच्चे तुमसे दोस्ती करना चाहते हैं। परन्तु वे डरते हैं।

टिंकू बन्दर– पर क्यों? मैंने तो उनको कभी नहीं डराया.......

मीता लोमड़ी– वो तुमसे नहीं तुमसे आने वाली दुर्गन्ध से डरते हैं।

टिंकू बन्दर– परन्तु मुझे तो अपने से कोई बदबू नहीं आती।

मीता लोमड़ी– हाँ, क्योंकि तुम्हे उसकी आदत पड़ गई है। अच्छा बताओ तुम पिछली बार कब नहाए थे?

टिंकू बन्दर– मैडम मैं तो हफ्ते में एक बार नहाता हूँ। इस बार हो गए होंगे सात–आठ दिन।

मीता लोमड़ी– क्या तुम्हें पता है, हमें हर रोज़ नहाना चाहिए, इससे हमारा शरीर साफ रहता है, इसके अलावा, हर एक दिन छोड़ के सर को साबुन या शैम्पू से धोना चाहिए।

टिंकू बन्दर– साबुन से धोना क्यों जरूरी है?

मीता लोमड़ी– अगर हम बालों को साबुन से नहीं धोते तो सर में मैल जमा हो जाता है। यही मैल जूँ को बुलावा देता है।

टिंकू बन्दर— परन्तु जूँ छोटी सी प्यारी सी होती है, वो हमारा क्या बिगाड़ सकती है?

मीता लोमड़ी— नहीं टिंकू। जूँ बस दिखने में छोटी लगती है। दरसल यह हमारे सर में रहकर सारा खून चूस जाती है, इसी के कारण सर में बहुत खुजली होती है।

यह कहकर टिंकू सर में खुजली करने लगा, उसी दौरान मीता लोमड़ी की नजर उसके नाखून पर पड़ी।

मीता लोमड़ी— और देखो..... तुम्हारे नाखून भी कितने लम्बे हैं, और इनमें कितनी गन्दगी जमा हुई है, क्या तुम्हें पता नहीं हाथों और नाखूनों में गन्दगी के कारण बीमारी फ़ैलाने वाले कीटाणु हमारे पेट में चले जाते हैं, इसके कारण हमें कई तरह की बीमारियां हो सकती हैं।

टिंकू बन्दर— नहीं मैडम! मेरे हाथ तो एकदम साफ हैं, मैं अभी शौचालय होकर आया था और मैंने पानी से हाथ धोए।

मीता लोमड़ी— टिंकू...... शौचालय जाने के बाद केवल पानी से नहीं बल्कि साबुन या राख से हाथ धोने चाहिए। ऐसा करने से ही कीटाणु से छुटकारा मिलता है और हम स्वस्थ रह सकते हैं।

टिंकू बन्दर— जी..... आज से मैं यह बात याद रखूँगा।

इतने में ही छुट्टी की घंटी बज गई और सभी जानवर अपने—अपने घर जाने लगे। टिंकू भी स्वछता का ज्ञान लेकर घर को निकल गया।

दूसरे दिन जैसे ही टिंकू कक्षा में आया सभी सहपाठी हँसने लगे। उसका रंग काले से भूरा हो गया था। फिर भी कोई उससे बात करना नहीं चाहता था। टिंकू को बुरा लगा और वह अध्यापिका लोमड़ी के पास रोता हुआ गया।

टिंकू बन्दर— अध्यापिका आज तो मैं नहा कर आया हूँ, देखो मैंने अपने नाखुन भी काट लिए। परन्तु फिर भी कोई मुझसे बात नहीं कर रहा।

मीता लोमड़ी— हाँ टिंकू यह तो तुमने बहुत अच्छा किया। परन्तु न तो तुमने अपने दांत साफ किए और ना ही बालों में कंघी। और अपने कपड़े देखो वो भी बिना इस्त्री हैं।

टिंकू बन्दर— परन्तु मेरे घर पर तो इस्त्री है ही नहीं, मैं कर भी क्या सकता हूँ?

मीता लामड़ी— इसका समाधान है, तुम अपने कपड़े धोने के बाद उसे अच्छे से झाड़ कर सुखाया करो। इससे कपड़े सीधे रहते हैं और पहनने के बाद अच्छे लगते हैं।

टिंकू बन्दर— और मेरे घर में दन्त मंजन भी नहीं है, मैं दाँत कैसे साफ करूँ?

मीता लोमड़ी— तुम्हारे घर के पास इतने सारे नीम के पेड हैं, नीम की टहनी से दातुन करने से दाँत साफ ही नहीं स्वस्थ भी रहते हैं।

टिंकू बन्दर— अच्छा मैडम? मैं तो समझता था कि नीम का पेड़ सिर्फ छाया देता है।

मीता लोमड़ी— नहीं नीम के तो बहुत सारे फायदे हैं— इसके फल (निमोरी) खाने से खून साफ रहता है, और इसकी पत्तियां त्वचा के रोगों से बचाती हैं। और दातुन के बारे में तो मैंने तुम्हें बता ही दिया।

टिंकू ने लोमड़ी के द्वारा बताये सारे नुस्खे अपनाए। गर्मी के छुटी के बाद जब वह वापिस आया तो सब उसे देखते ही रह गए।

उसने बताया कि उसकी भूख में भी सुधार आया। और तो और, सारे जानवर उसके दोस्त बन गए और खुशी—खुशी उसके साथ खेलने लगे।

—गरिमा कौशिक

बिंदुओं को मिलाएँ और रंग भरें।

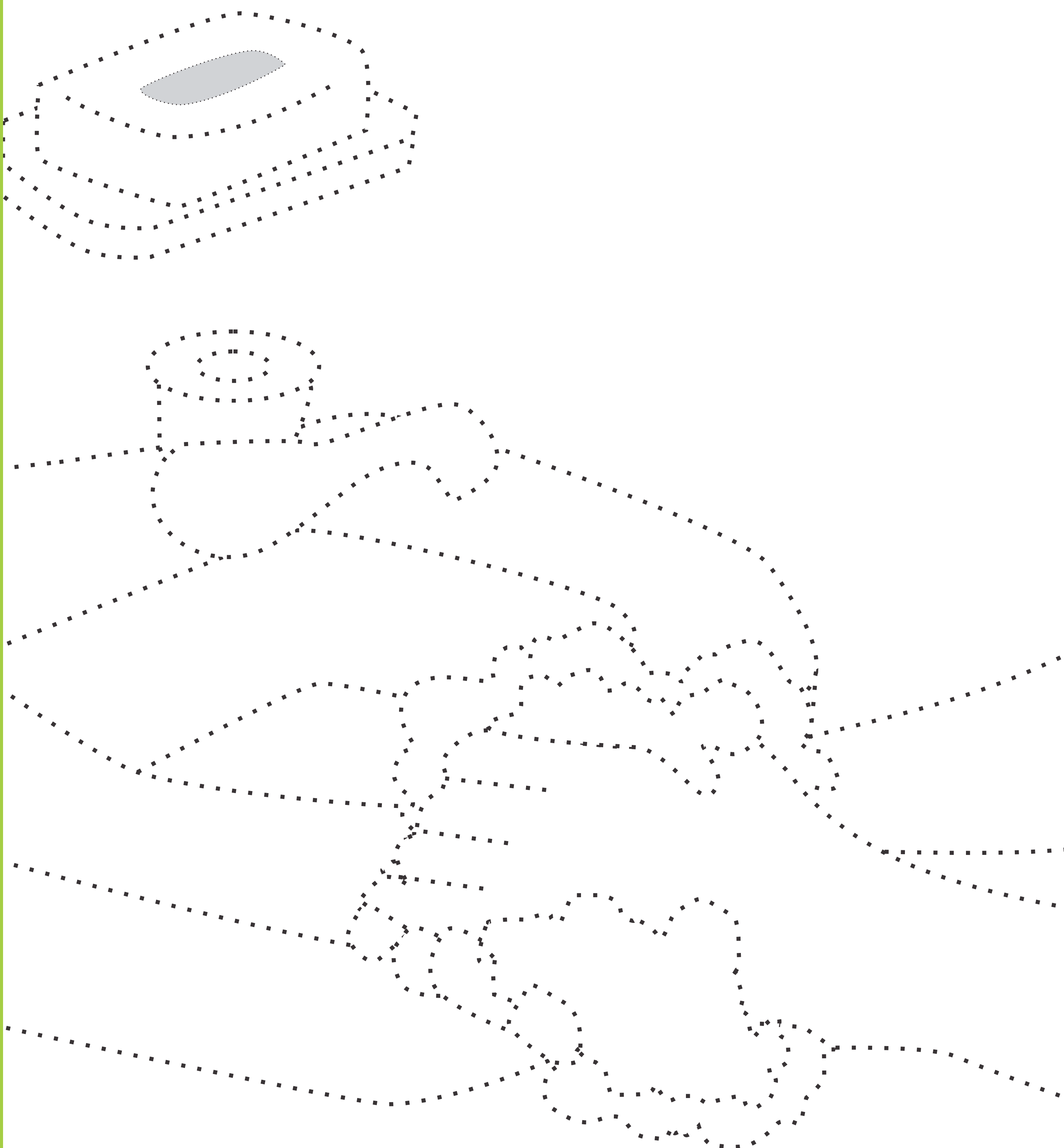

स्वस्थ दुनिया की राह की खोज करें।

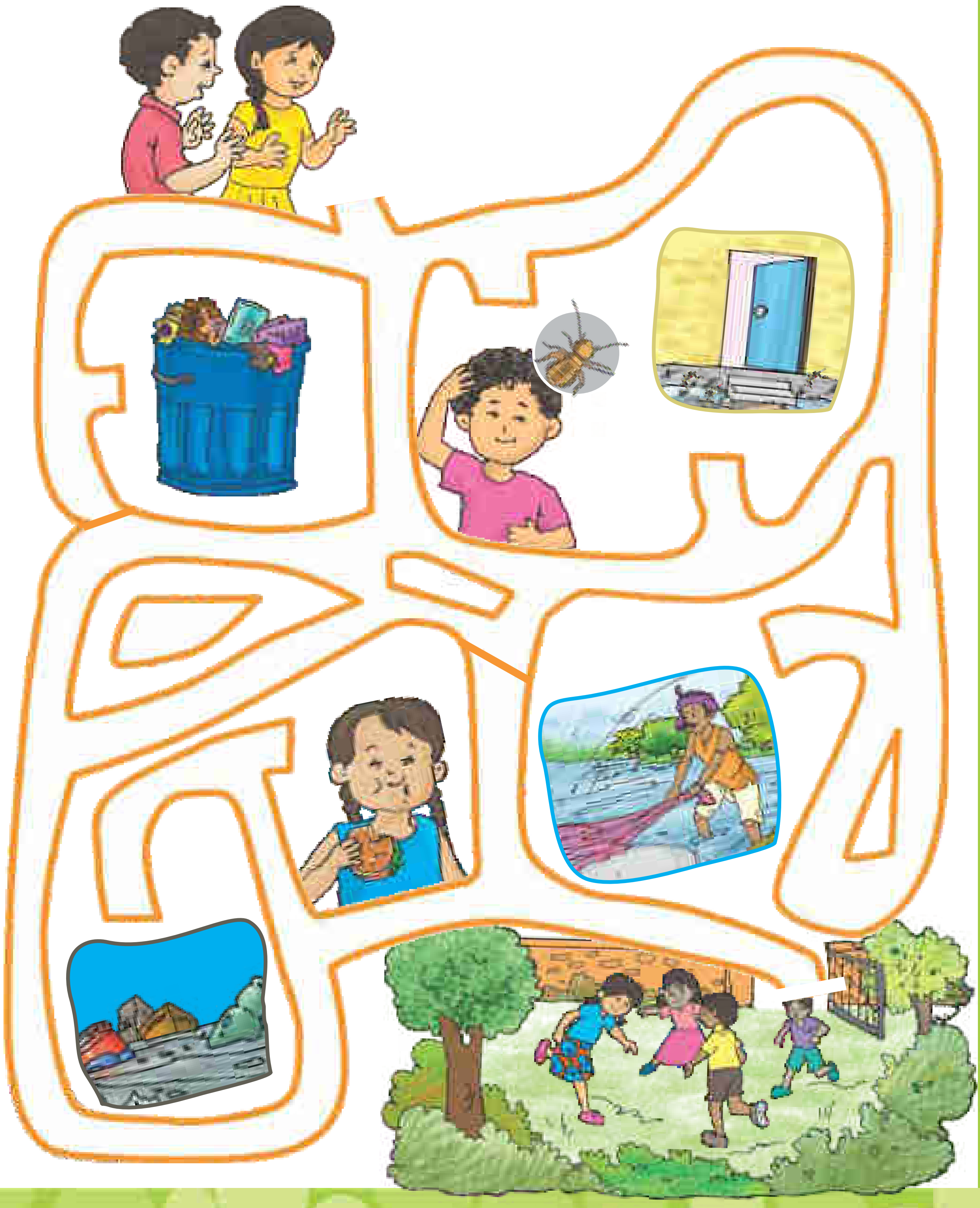

अंतर खोजें।

रंग भरें।

वाक्य बनाएँ—

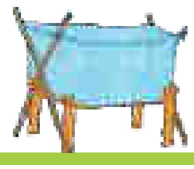

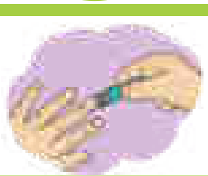

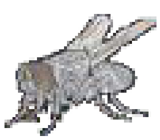

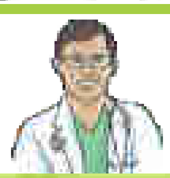

कार्यकलाप

शब्दों को ढुँढें।

H	J	A	U	N	D	I	C	E	D	G	E	U
O	R	V	T	O	W	M	M	H	Y	T	M	T
C	L	E	A	N	L	I	N	E	S	S	A	O
C	S	Y	P	B	I	H	R	A	E	H	L	O
H	O	A	Q	I	C	O	P	T	N	A	A	T
O	A	M	K	V	E	H	U	A	T	M	R	H
L	P	N	B	G	T	W	I	D	E	P	I	B
E	U	P	D	O	U	L	R	E	R	O	A	R
R	U	I	O	W	P	A	G	N	Y	O	Y	U
A	E	T	Q	B	A	T	H	G	E	R	M	S
T	M	U	Z	M	O	S	Q	U	I	T	O	H
B	R	G	V	O	K	U	H	E	A	I	Y	M
I	N	F	E	C	T	I	O	N	B	G	R	O

Words: Lice, Toothbrush, Toothpaste, Cholera, Soap, Shampoo, Dysentery, Cleanliness (Clean), Comb, Malaria, Dengue, Bath, Mosquito, Jaundice, Handwash (Wash), Infection, Diet and Germs.

चित्र को देखकर अपनी कहानी लिखें।

अपशिष्ट प्रबंधन

राजू की आत्मकथा

प्यारे दोस्तों! पहचाना? मैं आपका पुराना दोस्त राजू हूँ– आपकी पुरानी नोट बुक का एक कागज, पिछले साल हमने एक साथ बहुत अच्छा समय बिताया था।

आज मैं आपको अपनी कहानी बताने जा रहा हूँ। मैं एक बहुत बड़ा चमकदार हरा पेड़ था जो की जंगल में रहता था और एक दिन बहुत सारे लकड़हारे आए और उन्होंने मुझे और मेरे बहुत सारे दोस्तों को जड़ से काट कर एक कागज़ बनाने वाले कारखाने को बेच दिया।

वहाँ पर मेरे जैसे बहुत सारे पेड़ रोज़ाना लाए जाते थे। उस कारखाने में काम करने वाले कर्मचारियों ने मुझे और मेरे जैसे बाकी पेड़ों को एक अच्छे फ्लैट कागज़ के रिम में बदल दिया।

बाद में मुझे छात्रों द्वारा उपयोग किया जाने के लिए एक सुंदर नीले और काले हार्ड कवर के साथ, नई नोटबुक में बदल दिया गया था। मै बहुत खुश था जब मुझे कारखाने से दुकानों में बेचने के लिए बाकी नोटबुक के साथ बांध रहे थे। जब मैं दुकान में पहुँचा तब आपने मुझे अपनी अंग्रेजी नोट बुक के लिए खरीदा था, अब याद आया मैं कौन हूँ। हम एक साथ रोज़ाना स्कूल आते थे, आप मुझपे सुंदर कविताएं, निबंध, और नई नई जानकारियां लिखा करते थे।

परीक्षाओं से पहले मुझसे अध्ययन कर मेरे साथ इतना समय बिताया करते थे। फिर अचानक एक दिन परीक्षा के बाद आपने मुझे एक अपशिष्ट के रूप छोड़ दिया।

मुझे आपके द्वारा फेंके हुए अन्य कचरों के साथ एकत्र कर समुदाय कचरे के डिब्बे में फेंक दिया गया। वहाँ से मुझे डंपिंग साइटों के लिए ले जाया गया। ठीक से न फेंका अपशिष्ट और कचरे की बड़ी राशि से आसपास बदबू होती है और पर्यावरण भी प्रदूषित होता है।

क्या आप जानते हैं आजकल कचरे की बढ़ती हुई राशि और उसका ठीक से निबटान न करना एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। यहाँ पहुँच कर मेरे जैसे सभी कागज़ की कहानी खत्म हो जाती है।

मैं जानता हूँ कि परीक्षा के बाद आपको मेरी जरूरत नहीं होगी और अगली कक्षा के लिए आप मेरी जैसी नई नोटबुक ले लेंगे, पर आप चाहें तो मुझे पुनर्चक्रण द्वारा एक और नई ज़िन्दगी दे सकते हैं।

पुनर्चक्रण यानि पुनः उपयोग और अपशिष्ट उत्पादों की रीसाइक्लिंग, पुनर्चक्रण एक बहुत पुरानी अवधारणा है, लेकिन हम उपयोग और फेंक संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं और इसके बारे में भूलते जा रहे हैं। पुनर्चक्रण अपशिष्ट पदार्थ से कुछ नया और उपयोगी बनाने के बारे में है।

क्या आप जानते हैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हमेशा अपनी वस्तुओं का पुनः प्रयोग करते थे। वे कागज की एक छोटी सी चिट का भी अपव्यय नहीं करते थे।

याद है आपकी दादी नानी भी पुरानी चादर और साड़ी से खरीदारी के लिए बैग बनाती थी। यह पुनर्चक्रण है।

आप सब भी यह कर सकते हो, हमारे आस पास बहुत से गरीब बच्चे किताबें नहीं होने के कारण पढ़ाई नहीं कर पाते आप उन्हें अपनी पुरानी किताबें दे सकते हैं। हम पुरानी पुस्तिकाओं से खाली पृष्ठों का उपयोग करें तो एक नई पुस्तिका बना कर उसे दुबारा इस्तेमाल कर सकते हैं। अखबार और अपने पुराने नोट बुक के कवर से पेपर बैग बना सकते हैं, आप उपहार रैपिंग पेपर के रूप में अपने पुराने हास्य पुस्तक पृष्ठों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

इससे कई फायदे हैं:–

- पुनर्चक्रण करके हम कचरे को कम कर सकते हैं।
- पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं।
- नए उत्पादों के उत्पादन के लिए कच्चे माल के लिए प्रकृति पर निर्भर न रहकर हम प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण कर सकते हैं।

आशा करता हूँ कि आप सभी ने मेरी कहानी से कुछ सीखा होगा और आप आज से ही अपने घर और स्कूल में चीजों को ठीक से उपयोग कर उनकी पुनरावृत्ति करेंगे।

—नेहा

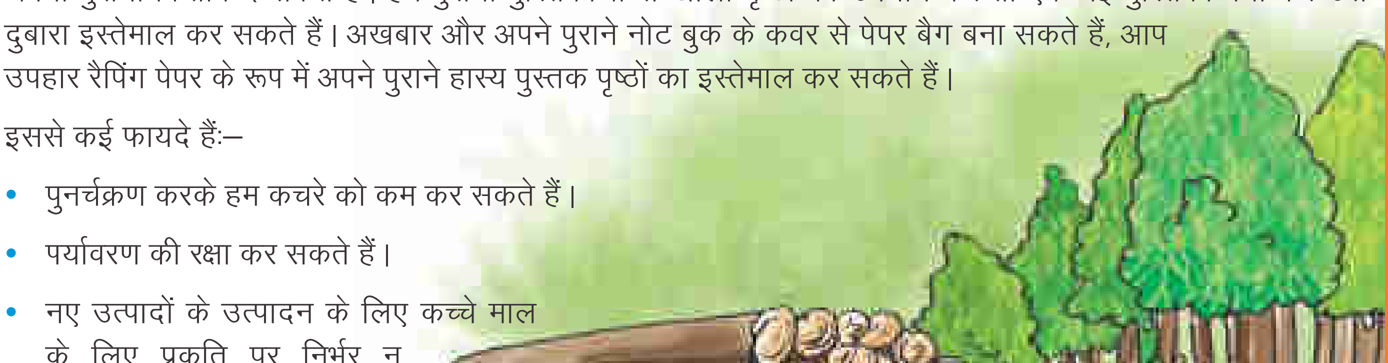

बिंदुओं को मिलाएँ और रंग भरें।

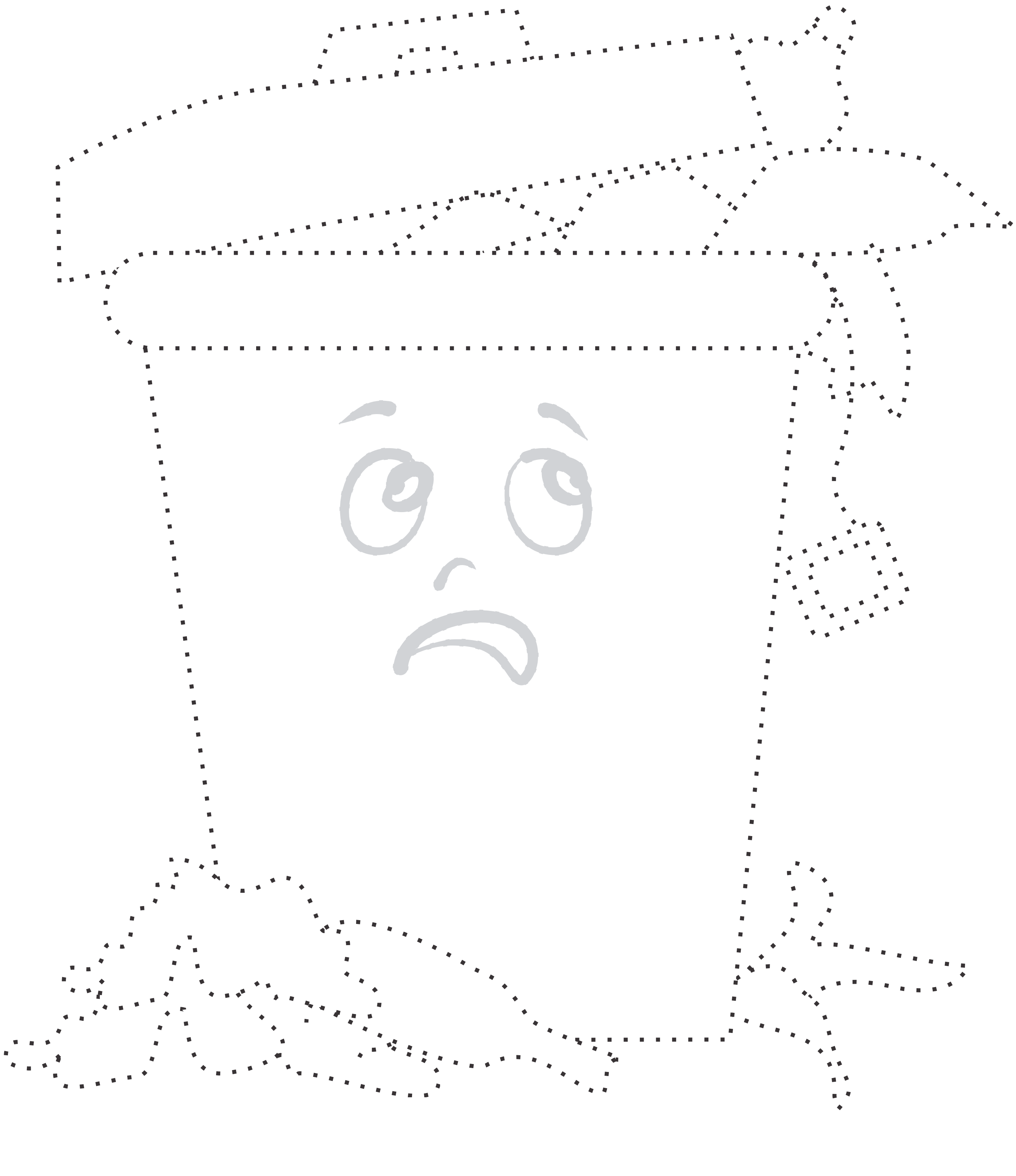

इस गीले कूड़े को सही जगह पहुचाएँ।

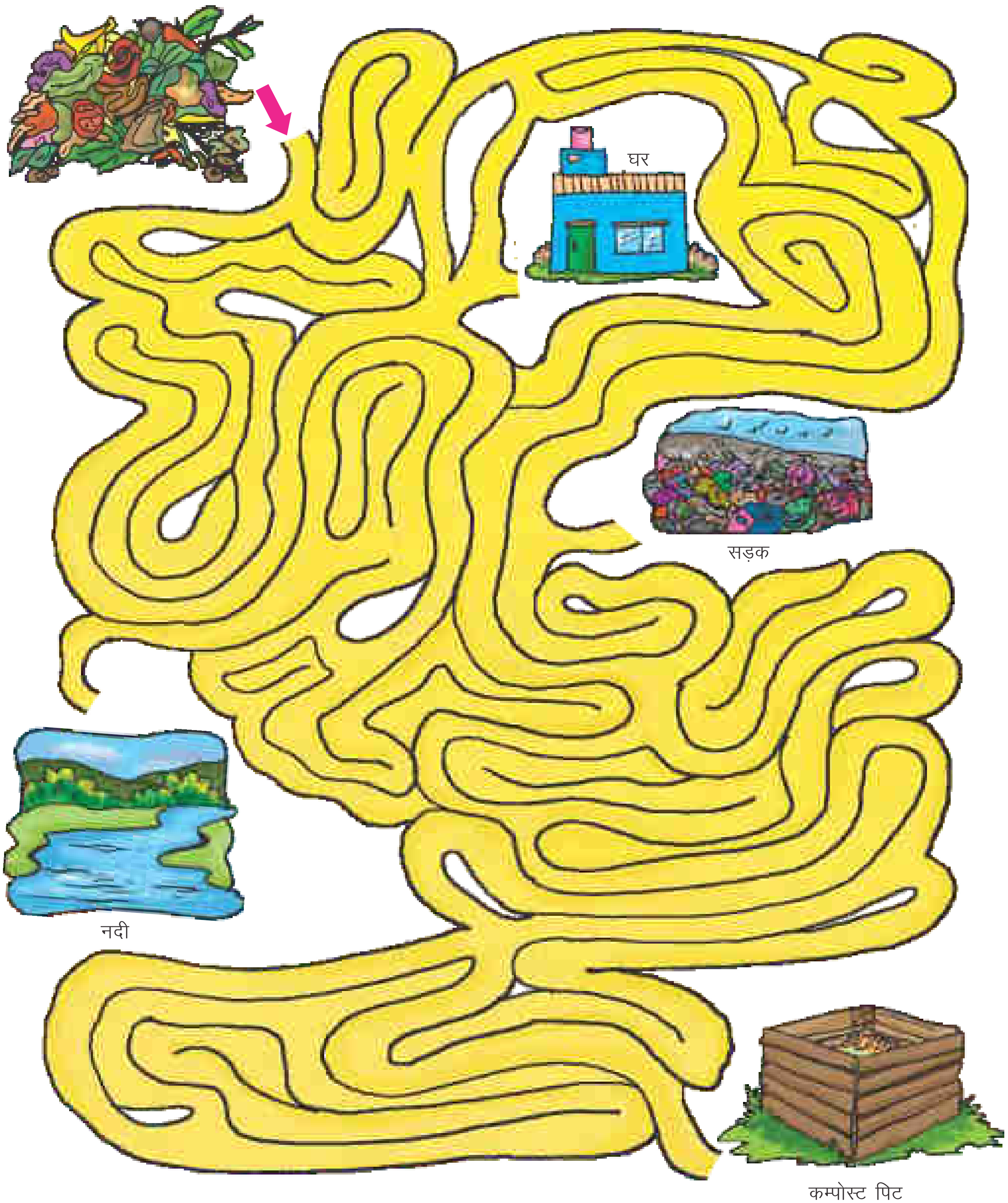

रंग भरें।

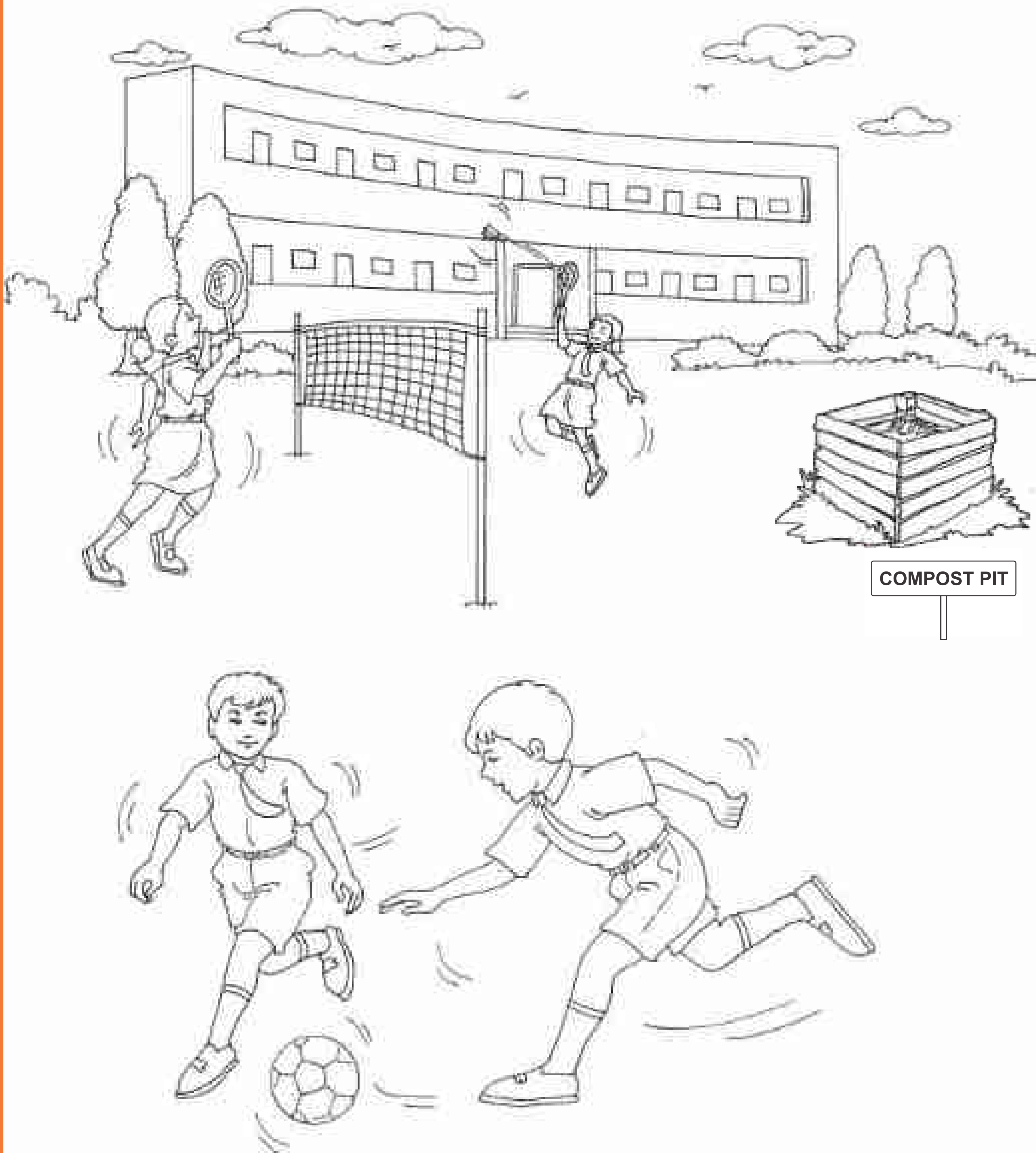

अंतर खोजें।

वाक्य बनाएँ।

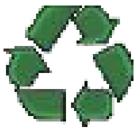

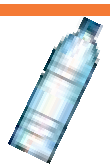

कार्यकलाप

चित्र को देखकर अपनी कहानी लिखें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

जल

नई सीख

आज सब बच्चे बहुत खुश थे क्यूँकि कल उनकी क्लास एडुकेशनल ट्रीप के लिए जैसलमेर घुमने जा रही थी। लंच टाइम में सभी बच्चे आपस में ट्रीप को ले कर चर्चा कर रहे थे। कोई घुमने की जगह के बारे में बात कर रहा था तो कोई खाने पीने की चीजों के बारे में, कुछ आपस में कौन कौन से गेम्स ले कर जाने हैं की लिस्ट बना रहा था। वहीं हर्ष अपने दोस्तों साथ गाँव के स्कूल के बच्चों के साथ किस विषय में बात करनी है के बारे में विचार कर रहे थे, तभी पायल ने सब को साइंस मैम ने जो पानी के विषय में बताया उसके बारे में सब का ध्यान आकर्षित करती है और कहती है की क्यूँ ना हम अपने जैसलमेर के दोस्तों से पानी के विषय में बात करें। इस पर रोनित अपनी सहमति जताते हुए कहते हैं कि जैसलमेर राजस्थान में है और वहाँ पानी की काफी कमी होती है क्यूँ ना हम उन सब को स्वच्छ और स्वस्थ पानी के बारे में जानकारी दें।

पायल खुश हो कर कहती है कि वह पानी को स्वच्छ करने की तरीके जैसे पानी को पीने से पहले कम से कम 20 मिनट तक उबालना चाहिए, या गाँव के आँगनवाडी से क्लोरिन की गोलियाँ ले कर पानी को स्वच्छ करना चाहिए। इस पर हर्ष ने कहा कि वह उनको पानी के स्वास्थय के बारे में भी बता सकते हैं जैसे हमेशा पीने के पानी को ढक के रखना चाहिए, पीने के पानी को बरतन में से निकालने के लिए बडे हैण्डल वाले बर्तन (घंटी) का इस्तेमाल करना चाहिए, पीने के पानी में कभी भी हाथ या ऊँगली नहीं डालनी चाहिए इससे कई स्वास्थय संबंधित समस्या हो सकती हैं जैसे दस्त, उल्टी, बुखार इत्यादि।

यह सब विचार करके सब अगले दिन मिलने का वादा कर अपनी क्लास में वापस चले जाते हैं।

अगले दिन जैसलमेर पहुँचे पर सब रेत के टीलों को देख कर बहुत खुश होते हैं। अपने जैसलमेर के नए दोस्तों को मिलने की उमंग को दिल में लेकर सभी बच्चे रेत की टीलों पर फिसलते, मस्ती मारते हुए वहाँ के स्कूल की तरफ बढने लगते हैं। स्कूल में पहुँच कर स्वागत बडे हर्ष ओ उल्लास के साथ किया जाता है और स्कूल के प्रधानाचार्य उनका परिचय स्कूल के बच्चों से कराते हैं और एक गाँव के स्कूल के बच्चे के साथ एक शहर के बच्चे की जोडी बनाते हैं और उनको एक दूसरे के साथ एक दूसरे से अपने विचारों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

हर्ष की जोडी जगत के साथ बनी थी और जैसा उसने अपने दोस्तों के साथ तय किया था वह जगत से पानी के विषय में बात करना शुरू करता है, इस पर जगत उसे अपने घर दिन के खाने के लिए न्योता देता है और लंच टाइम में प्रधानाचार्य से अनुमति ले कर दोनो जगत के घर के लिए चल देते हैं, रास्ते में उसे कुछ औरतें सर पर पानी का मटका ले कर जाती हुई दिखाई देती हैं तो जगत से पुछने पर उसे पता चलता है कि

उनके गाँव में पानी की कमी होने के कारण घर की महिलाऐं घर से 10 किलोमीटर दूर पीने का पानी लेने जाती हैं। इस बात को सुन कर हैरान परेशान हर्ष को पता ही नहीं चला की कब वह जगत के घर पहुँच गया। घर पर जगत की माँ ने उन दोनों के लिए खाना बनाया हुआ था क्यूँकि जगत ने पहले ही माँ को उनके शहर से आने वाले दोस्तों के बारे में बता दिया था। माँ के कहने पर जगत हर्ष तो हाथ धोने के लिए आँगन में रखे बाल्टी के पास ले जाता है और उसको हाथ एक बर्तन में धोने को कहता है, हर्ष के चेहरे पर उठे प्रश्न को पहचान के जगत मुस्कुरा कर कहता है कि पानी की बचत करने के लिए वह पानी की एक एक बूँद को बचाते हैं और इस पानी को घर के पशु को पिलाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। खाना खा कर जब दोनों स्कूल पहुँचते हैं।

स्कूल में उनकी मैडम सब को एक जगह पर इकट्ठा होने को कहते हैं और कुछ बच्चों को अपने आज के अनुभव के बारे में सब को बताने के लिए आमंत्रित करती हैं।

हर्ष जो सबसे अपना अनुभव बताने के लिए काफी उत्साहित था, मैडम के बुलाने पर काफी उत्साहित था, मैडम के बुलाने पर सबसे पहले आगे जा कर बडे ही विनम्र भाव से सभी बडों को प्रणाम कर कहता है कि जब वह यहाँ आने से पहले वह और उसके दोस्त अपने जैसलमेर के दोस्तों को पानी के स्वच्छता और स्वास्थय के बारे में जानकारी देंगें कि विचार से आए थे कहीं ना कहीं उन्हें लगता था कि उनको सब जानकारी है पर यहाँ आ कर उनको एक नई सीख मिली है वह है पानी का सदुपयोग। उपयोग की हुई पानी को व्यर्थ नहीं बहाना चाहिए। और वह सभी बच्चों के सामने प्रण लेता है कि वह आज से कभी भी पानी को बेवजह नहीं बहाने देगा, अगर पानी का नल खराब है तो तुरंत बडों को कह कर उसको ठीक कराने का आग्रह करेगा, कभी भी ब्रश करते समय नल को खुला नहीं छोडेगा और शावर की जगह बाल्टी से नहाएगा। उसकी बातें सुन कर बाकी के सभी बच्चे भी उसकी बात से सहमति जताते हुए कहते है वह वापस जा कर स्कूल के बाकी बच्चों को भी पानी के सदुपयोग के बारे में अवगत कराऐंगे।

बच्चों की बातें सुन कर मैडम खुश हो कर सभी को शाबाशी देती हैं और जैसलमेर के स्कूल के प्रधानाचार्य से वापिस जाने की अनुमति माँगती है। हर्ष और उसके सभी साथी अपनी नई सीख के साथ अपने नए दोस्तों से विदा लेते हैं।

—नेहा

बिंदुओं को मिलाएँ और रंग भरें।

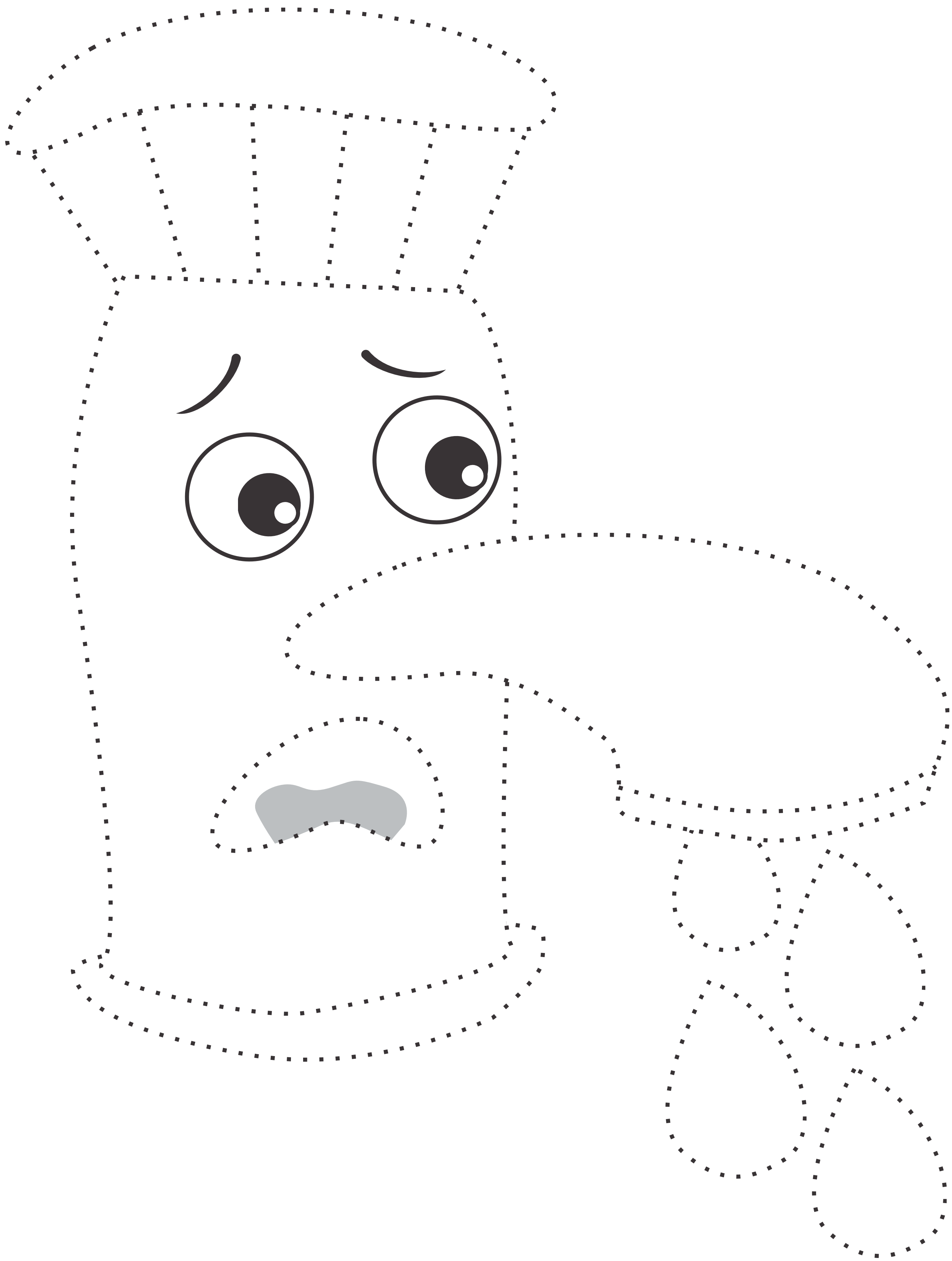

सीमा और मनीष को साफ पानी पीने की सही जानकारी दे और स्वस्थ रहने में मदद करें।

अंतर खोजें।

रंग भरें।

वाक्य बनाएँ।

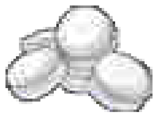	
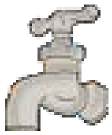	
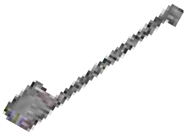	

कार्यकलाप

निम्नलिखित स्तम्भों का मिलान करें : –

(क) क्लोरिन (क) द्रव्य के लिए एक डब्बा, सामान्यतः शीशे या प्लास्टिक का बना

(ख) नल (ख) एक यंत्र जिसके द्वारा पानी शुद्ध होता है

(ग) हैजा (ग) शुद्धता का दूसरा शब्द

(घ) कृशि (घ) जीवन की सबसे आवश्यक चीज

(ड़) साफ (ड़) 70 प्रतिशत पानी इस उद्देश्य के लिए उपयोग होता है

(च) फिल्टर (च) आपूर्ति का एक स्रोत

(छ) पीने का बर्तन (छ) एक गैसिय पदार्थ

(ज) बाल्टी (ज) दूषित पानी में मच्छरों के होने का कारण

(झ) शीशा (झ) एक वस्तु जो नहाने और सफाई के लिए उपयोग होता है

(ञ) नदी (ञ) पीने के पानी को शुद्ध करने के लिए उपयोगी

(ट) मलेरिया (ट) एक वस्तु जिससे कोई एक पानी पी सकता है

(ठ) संसाधन (ठ) एक पात्र जहाँ पीने का पानी का संचय हो

(ड) बोतल (ड) पानी की एक प्राकृतिक धारा जो धरती के सहारे बहती है

(ढ) पानी (ढ) एक संक्रमण जो दुषित पानी पीने के कारण हो

(ण) वाष्प (ण) यंत्र जो पानी के प्रवाह को नियंत्रित करती है

(क) ञ (ख) ण (ग) ढ़ (घ) ड़ (ड़) ग (च) ख (छ) ठ (ज) झ (झ) ट (ञ) ड (ट) ज (ठ) च (ड) क
(ढ) घ (ण) छ

चित्र को देखकर अपनी कहानी लिखें।